

तिरुक्कुरल अनुसंधान और जैन सम्य सिद्धान्त विवेचन

हिन्दी सारांश

1. पुस्तक का मूल उद्देश्य

पुस्तक साहित्यिक, भाषिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक और धार्मिक प्रमाणों के आधार पर तिरुवल्लुवर तथा तिरुक्कुरल के जैन परम्परा से निकट सम्बन्ध को प्रतिपादित करती है।

2. अहिंसा का आधार

पुस्तक के अनुसार तिरुक्कुरल की नैतिकता का प्रमुख आधार अहिंसा है। इसमें जीव-दया, प्राणिहिंसा से बचना, इन्द्रिय-संयम, शाकाहार, त्याग और मोक्ष की दिशा में प्रगति सम्मिलित है।

3. आदिभगवन

प्रथम कुरल में प्रयुक्त आदिभगवन को अरिहन्त, जिन और वीतराग की जैन अवधारणाओं से जोड़ा गया है।

4. पाँच इन्द्रियों पर विजय

पाँच इन्द्रियों को वश में करने की धारणा को जैन आध्यात्मिक अनुशासन का प्रमुख संकेत माना गया है।

5. सार्वभौमिक नैतिकता

जैन पृष्ठभूमि पर बल देने के बावजूद पुस्तक तिरुक्कुरल को सार्वभौमिक नैतिक ग्रन्थ के रूप में स्वीकार करती है।

6. अरम्

अरम् में करुणा, अहिंसा, आत्मसंयम, सत्य, सदाचार, गृहस्थधर्म, सामाजिक उत्तरदायित्व, तप और मुक्ति जैसे तत्व शामिल माने गये हैं।

7. अहिंसा और मांस-त्याग

हत्या और मांसभक्षण की निन्दा को जैन अहिंसा से जोड़ा गया है; उपभोग से उत्पन्न मांस को भी नैतिक जिम्मेदारी माना गया है।

8. वैदिक व्याख्याओं की आलोचना

पुस्तक उन व्याख्याओं की आलोचना करती है जो तिरुक्कुरल को मुख्यतः वैदिक धर्मपरम्पराओं से व्युत्पन्न मानती हैं।

9. तिरुक्कुरल और प्रारम्भिक तमिल परम्परा

तिरुक्कुरल को तोलकाप्पियम्, अगत्तियम्, संगम साहित्य और जैन तमिल साहित्य से जोड़ा गया है।

10. तमिल में जैन योगदान

जैनों के व्याकरण, साहित्य, शिक्षा, नैतिक लेखन और बौद्धिक आदान-प्रदान में योगदान पर बल दिया गया है।

11. दक्षिण भारत में जैन धर्म

जैन बस्तियों, मंदिरों, तीर्थंकर प्रतिमाओं, अभिलेखों और समुदायों का ऐतिहासिक विवेचन किया गया है।

12. संस्थागत रूपान्तरण

कुछ जैन या बौद्ध संस्थानों के बाद में शैव या वैष्णव संस्थानों में सम्मिलित होने की सम्भावना प्रस्तुत की गयी है; ऐसे दावों का स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक है।

13. जैन दर्शन

जीव, अजीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, कर्म, कषाय, गुणस्थान, केवलज्ञान और मोक्ष आदि का विवेचन किया गया है।

14. कर्म और मोक्ष

तिरुक्कुरल के संयम, त्याग, तप, पुनर्जन्म और मुक्ति संबंधी विचारों को जैन कर्मसिद्धान्त के माध्यम से समझाया गया है।

15. अरवाझि और धर्मचक्र

अरवाझि को जैन धर्मचक्र से तथा जन्म-सागर को संसार से जोड़ा गया है।

16. इन्द्रिय-संयम और मुनि-आदर्श

इन्द्रिय-विजय को जैन मुनि, महामुनि, वीतराग और केवलज्ञानी के आदर्शों से जोड़ा गया है।

17. पुद्गल

स्वाद, रंग/प्रकाश, स्पर्श, ध्वनि और गन्ध को जैन पुद्गल सिद्धान्त के माध्यम से समझाया गया है।

18. पाँच तत्त्व

पाँच तत्त्वों की व्याख्या में जैन द्रव्य-सिद्धान्त को भी ध्यान में रखने का आग्रह किया गया है।

19. स्त्री और गृहस्थ जीवन

विवाह, परिवार, स्त्री, शील और सामाजिक उत्तरदायित्व पर चर्चा करते हुए जैन धर्म को केवल संन्यास तक सीमित नहीं किया गया है।

20. तुलनात्मक पद्धति

कुरल के शब्दों और पद्यों की तुलना पुराने तमिल टीकाओं, जैन ग्रन्थों, संस्कृत-प्राकृत समानान्तरों और ऐतिहासिक प्रमाणों से की जाती है।

21. प्रमुख योगदान

पुस्तक तिरुक्कुरल की जैन व्याख्या, जैन दर्शन की तमिल माध्यम से प्रस्तुति, तमिल इतिहास में जैन योगदान और तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन प्रदान करती है।

22. आलोचनात्मक सावधानी

प्रमाण और लेखक के निष्कर्षों में भेद करना आवश्यक है। तिरुवल्लुवर की निश्चित धार्मिक पहचान या मंदिरों की मूल पहचान संबंधी दावों का आधुनिक शोध से परीक्षण किया जाना चाहिए।

23. समग्र मूल्यांकन

यह तिरुक्कुरल का व्यापक जैन ऐतिहासिक और दार्शनिक पुनर्पाठ है। इसकी शक्ति व्यापक तुलनात्मक सामग्री है; इसकी सीमा कुछ ऐतिहासिक निष्कर्षों का वादात्मक स्वर है।